SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

उत्तराखण्ड की लोकगाथाओं और लोकगीतों के महत्व का विश्लेषण

योगेश मैनाली, पी–एचडी, समाजशास्त्र विभाग
एस.एस.जे. परिसर, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
योगेश मैनाली, पी–एचडी
E-mail : yogesh928@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 06/10/2025
Revised on : 08/12/2025
Accepted on : 17/12/2025
Overall Similarity : 00% on 09/12/2025

शोध सार

किसी भी समाज की लोकगाथाऐं एवं लोकगीत उस समाज की सांस्कृतिक सामंजस्य की प्रतिबिम्ब होती हैं। ये लोककथाऐं एवं लोकगीत वहां के जनमानस की जीवनशैली, सामाजिक संबंधों, सांस्कृतिक मूल्यों, आर्दशों, प्रेरणादायक अनुभवों, प्रसंगों एवं सामाजिक समस्याओं के उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाज के सर्वांगीण विकास के लिए समाज के व्यक्तियों में सामूहिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का होना नितान्त आवश्यक होता है। लोकगाथाऐं एवं लोकगीत लोगों में सामूहिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को प्रगाढ़ करने के साथ–साथ समाज में सामाजिक–सांस्कृतिक, सामाजिक–धार्मिक, सामाजिक–आर्थिक समृद्धि को पल्लवित एवं पोषित करने का कार्य भी करती हैं जिससे समाज की सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक पूंजी मजबूत होती है। उत्तराखण्ड राज्य अपनी प्राकृतिक सौन्दर्यता के साथ–साथ सांस्कृतिक धरोहरों, लोकगाथाओं, लोकगीतों एवं लोक नृत्यों के लिए प्रसिद्ध है। यहां की लोकगाथाओं एवं लोकगीतों ने हमेशा लोकमानस के हृदयस्थ अन्तभावों को उद्घाटित करने का कार्य किया है। राज्य की गौरवशाली शौर्य परम्पराओं में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, राज्य आंदोलन, जन आंदोलन, पर्यावरण संरक्षण आंदोलन जो भी समाज के लिए किये गये आंदोलन हैं। इन आंदोलनों को आगे बढ़ाने में हमारी लोकगाथाओं एवं लोकगीतों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उत्तराखण्ड की लोकगाथाऐं एवं लोकगीत परम्परागत मूल्यों, विश्वासों, मान्यताओं, रीति–रिवाजों, पर्वों, त्योहारों को लोगों के दिलों में संजोने एवं इनके प्रति लोगों में, सम्मान की भावना जाग्रत करने में हमेशा तत्पर रहती हैं। इसी का परिणाम है कि यहां के लोक कलाकारों द्वारा प्राचीन लोकगीत एवं लोकगाथाओं को आज भी अपने गीतों की धुनों में पिरोया जाता है। उत्तराखण्ड राज्य की संस्कृति का मुख्य अंग यहां की लोकगाथाऐं एवं लोकगीत

हैं जो राज्य की सामाजिक–सांस्कृतिक समृद्धि, सामाजिक मूल्यों, सामाजिक प्रतिमानों एवं जनमानस से सम्बन्धित समाज के विभिन्न पहलुओं को जीवंत रखने का कार्य कर रही हैं। ये लोकगाथाऐं एवं लोकगीत समाज में समन्वयकारी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देकर आज के आधुनिक दौर में भी अपनी उपस्थिति ज्यों की त्यों बनाई हुई हैं जिससे इनकी समाज में उपयोगिता एवं महत्व खुद ब खुद स्पष्ट होती है।

मुख्य शब्द

लोकगाथाऐं, लोकगीत, सामाजिक–सांस्कृतिक, समृद्धि, समरसता.

प्रस्तावना

किसी भी समाज की लोककथाऐं एवं लोकगीत उस समाज के संस्कृति के अभिन्न अंग होते हैं। लोकगाथाऐं एवं लोकगीत उस समाज की संस्कृति को जीवंत रखते हैं। भारत की परम्परा और संस्कृति के मुख्य अंग लोककथाऐं, लोकगाथाऐं एवं लोकगीत हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के दौर में भी हमारी लोकगाथाओं एवं लोकगीतों का अस्तित्व ज्यों का त्यों बना हुआ है। इसके पीछे मुख्य कारण भारत की प्राचीन संस्कृति है जो हमें समाज में जीने का तरीका सिखाने के साथ–साथ लोकगाथाओं एंव लोकगीतों की समाज में महत्ता के विषय में ज्ञान कराती हैं। लोकगाथाऐं एवं लोकगीत समाज के अभिन्न अंग होने के कारण ये सीधे समाज एवं व्यक्तियों से जुड़े होते हैं। लोकगाथाऐं एवं लोकगीत हमें अपने अतीत के इतिहास से रूबरू करवाने के साथ ही ये हमारे सामाजिक मूल्यों, नैतिक मूल्यों, विश्वासों, परम्पराओं एवं सांस्कृतिक पूंजी की उपयोगिता का ज्ञान हमारी आने वाली पीढ़ियों को भी करवाते हैं। लोक गाथाओं एवं लोकगीतों में समाज के समस्त पहलुओं जैसे मनुष्य का जन्म, पृथ्वी का निमार्ण, देवी–देवताओं के प्रसंग से लेकर लोक व्यवहार से जुड़ी गाथाऐं शामिल हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि लोक गाथाऐं एवं लोकगीत लोगों के द्वारा लोगों के लिए कहे जाते हैं जिनका समाज में बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है।

शोध पत्र का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तराखण्ड राज्य की लोकगाथाओं और लोक गीतों के महत्व का विश्लेषण किया गया है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। यह शोध पत्र द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इस शोध पत्र को तैयार करने हेतु पुस्तकों और पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध आलेखों और इस विषय से संबंधित ऑनलाइन प्लेटफार्मों पर उपलब्ध सामग्री का अध्ययन कर विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

लोकगाथाऐं एवं लोकगीतों की ऐतिहासिक पष्ठभूमि

लोकगाथाओं का जन्म मनुष्य के जन्म के साथ जुड़ा हुआ है। इनका जन्म तब से माना जाता है जब मनुष्य ने अपनी कल्पनाओं एवं अनुभवों को कथात्मक लोकगीतों के रूप में कहना शुरू किया था। उत्तराखण्ड की लोकगाथाऐं, लोक साहित्य का वह रूप है जिसमें सीधे–सीधे छंदों में कोई ऐसी सरल बात कहीं गई हो जिसका प्रचार मौखिक रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरण होता रहता है।[1] लोकगाथाऐं लोक जीवन के कथात्मक लोकगीत होते हैं, जिन्हें गायक अनेक प्रकार के वाद्यों के साथ गाता है।[2] जिस प्रकार प्रत्येक कविता का सृजन कवि विशेष ही करता है, उसी प्रकार लोकगाथाओं की रचना भी कवि विशेष ही करते हैं। समूचा समुदाय नहीं, परन्तु रचना हो चुकने के उपरान्त वह समाज की वस्तु बन जाती है। यही कारण है कि लोकगाथाओं में उनके रचनाकारों का नामोल्लेख नहीं मिलता है। लोकसाहित्य समाज के धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों के साथ–साथ स्वस्थ मनोरंजन का पक्ष भी अपने में समाहित किये हुए हैं। लोकसाहित्य सृजन का एक सहज, स्वाभाविक और मधुर रूप है, जो लोकरंजन के साथ–साथ समाज में जीवन का संचार करता है।[3] स्थानीय रूप में जितनी भी लोकगाथाऐं प्रचलित हैं, उन्हें वर्ण विषय की दृष्टि से चार भागों में विभक्त किया जा सकता है– पौराणिक, धार्मिक, वीरगाथाऐं

और प्रणयगाथाऐं।[4] लोकगाथा लोकसाहित्य का वह रूप है जिसमें सीधी–सादी भाषा में कोई सरल बात कही जाती है। इसका प्रचार–प्रसार मौखिक रूप से पीढ़ी–दर पीढ़ी होता रहता है। लोकगाथा यद्धपि किसी व्यक्ति विशेष की रचना हो सकती है, परंतु धीरे–धीरे उस पर सम्पूर्ण समाज का अधिकार हो जाता है, यही कारण है कि लोकगाथाओं में कहीं भी रचनाकार का नामोल्लेख नहीं मिलता है।[5]

पौराणिक लाकगाथाऐं

उत्तराखण्ड की पौराणिक लोकगाथाऐं प्राचीनता, विविधता और रोमांचकता का प्रतिनिधित्व करती है। ये लोकगाथाऐं विभिन्न देवी–देवताओं के धार्मिक प्रसंगों का कथात्मक वर्णन करती है। इन लोकगाथाओं के माध्यम से यहां की पौराणिक, धार्मिक संस्कृति को बेहतर समझा जा सकता है। पौराणिक लोकगाथाओं में पुराणों की गाथाओं के साथ–साथ श्रीमद्भागवत के नवम् एंव दशम् स्कन्द की कृष्ण चरित्र संबंधी गाथाऐं गायी जाती हैं। ''जागर'' नाम से प्रचलित गाथाऐं यद्धपि अलग विषयवस्तु की दृष्टि से भिन्नता रखती है, तथापि उन्हें पौराणिक गाथाओं की पृष्ठभूमि के रूप में लिया जा सकता है।[6] इस प्रकार ''जागर'' समाज में एक महत्वपूर्ण सामाजिक–सांस्कृतिक, सामाजिक–धार्मिक प्रथा का प्रतिनिधित्व करता है। यह समुदाय के साथ–साथ संगठित और समृद्ध समाज के निर्माण में सामूहिकता का अभिवादन, सामाजिक समर्थन, परम्परागत धार्मिकता और संस्कृति का संरक्षण तथा सामाजिक संघर्षों का समाधान करने में समाज में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

धार्मिक लोकगाथाऐं

धार्मिक लोक गाथाऐं समुदाय के सदस्यों के बीच आपसी समरसता, धार्मिक भावनाओं की स्थायिता के साथ–साथ सामाजिक समृद्धि को संजोती है। यहां की धार्मिक लोकगाथाऐं सामाजिक संरचना, सामाजिक न्याय, धार्मिक आर्दशों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन धार्मिक लोकगाथाओं में तंत्र–मंत्र एवं देवताओं के आह्वाहन एवं उन्हें जागृत करने के लिए गाथाऐं गाई जाती हैं। ''जागर'' गाथाऐं, गंगनाथ, भोलनाथ, मसाण, ऐड़ी, नरसिंह, भूमिया एवं नंदादेवी की गाथाऐं धार्मिक लोकगाथाओं के उदाहरण हैं।[7]

वीरगाथाऐं

किसी भी राज्य की संस्कृति और लोकसाहित्य उस राज्य की जनता के जीवन की अनुभूति और यर्थाथ का सरल अंकन होता है। इसका प्रमाण हमें लोकगाथाओं में मिलता है।[8] लोकगाथाओं में वीरगाथाओं के अंतर्गत वीरों की युद्ध तथा शौर्य संबंधी गाथाऐं शामिल हैं। वीरगाथाओं के लिए स्थानीय बोली में ''भड़ौ'' शब्द का प्रयोग होता है। उत्तराखण्ड में भड़ौ की परम्परा वैसी ही है जैसी हिंदी साहित्य के आदिकाल में वीरगाथा परम्परा की है।[9] शासकों के अतिरिक्त यहां जातीय वीरों की गाथाऐं भी प्रसिद्ध हैं। इनमें पदमा रौतेला, रतुआ फड़त्याल, अजूबा बकौल, भगवा रौत, तीलू रौतेली, जीतू बगड़वाल, रणू रौत, गढ़ सुम्याल तथा आशा हीर हिड़वाण प्रमुख हैं।[10] उत्तराखण्ड की लोकगाथाओं में वीरगाथाऐं समाज में वीरता, साहस और निष्ठा के परिचय को समाज से आत्मसात् कराती हैं। इन वीरगाथाओं से हम अपने अतीत के इतिहास से रूबरू होते हैं। इन वीरगाथाओं के किरदारों के जीवन के पहलुओं से शौर्य, वीरता, न्याय और समाज सेवा, समाज को आदर्श बनाने का काम करते हैं।

प्रणयगाथाऐं

प्रणयगाथाऐं प्रेम, सहानुभूमि, वफादारी और विश्वास जैसे मूल्यों के महत्व के विषय में समाज को ज्ञान करवाती हैं। ये गाथाऐं आधुनिक समाज को प्रेम और संबंधों के महत्व को समझाने में मदद करती हैं। इन गाथाओं में प्रेम, प्रीति और विश्वास के भाव उत्कृष्ट रूप से व्यक्त किये गये हैं। प्रणयगाथाओं में अर्जुन–वासुदत्ता, कुसुमाकोलिन, चंद्रावलोहरण, गंगनाथ तथा मालूशाही प्रमुख प्रणयगाथाऐं हैं।[11]

लोकगाथाओं एवं लोकगीतों का समाज में महत्व

उत्तराखण्ड की लोकगाथाऐं एंव लोकगीत सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये लोकगाथाऐं एवं लोकगीत समाज की विरासत को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये हमारे अतीत

के गौरवशाली इतिहास से हमारी युवा पीढ़ी को ज्ञान करवाती हैं। लोकगाथाऐं एवं लोकगीत समाज के उन समस्त पहलुओं जैसे संस्कृति, समाज, पर्यावरण, वन, जल, जंगल एवं जमीन, कृषि, प्रथायें, रीति–रिवाज, पर्व, त्यौहार, सामाजिक मुद्दे, सामाजिक कुरूतियां, जन आंदोलन एवं राज्य आंदोलन जैसे अनेक ज्वलंत मुद्दों के विषय में ज्ञान करवाने के साथ–साथ समाज को इनके महत्व के विषय में बताते हैं। ये लोकगाथाऐं एवं लोकगीत लोक यानि लोगों से संबंधित होने के कारण जनमानस से जुड़े मुद्दों को अपने विषय में प्राथमिकता देते हैं। इनके सार्थक अर्थ होते हैं, भाव होते हैं, जो कहीं न कहीं समाज को जोड़ने का कार्य करते हैं। लोकगाथाऐं हमें हमारे अतीत के पौराणिक, धार्मिक, ऐतिहासिक शौर्य, पराकर्म, समपर्ण, प्रेम, त्याग निष्ठा एवं बलिदान से संबंधित पक्षों का परिचय कराकर, हमें हमारे महानायकों के संघर्षों की गाथाओं से आत्मसात् कराने का कार्य भी करती हैं जिससे उत्तराखण्ड के अतीत के इतिहास को समझने में आसानी हो जाती है। इन गाथाओं को स्थानीय बोलचाल की भाषा में गाया गया है, जिसके कारण स्थानीय लोग इनके भावों एवं अर्थो को आसानी से समझ लेते हैं। ये लोकगाथाऐं गढ़वाली एवं कुमाऊँनी दोनों भाषाओं में मौजूद हैं। उत्तराखण्ड के लोकगीत समाज की विरासत को संरक्षित रखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जिससे हमारी युवा पीढ़ी और आगे आने वाली पीढ़ियों को अपनी संस्कृति एवं समाज की सामाजिक–सांस्कृतिक, सामाजिक–धार्मिक, सामाजिक–आर्थिक एवं सामाजिक–राजनैतिक पक्षों को समझने में मदद मिलती है। लोकगीत सामाजिक–सांस्कृतिक और भाषाई संदेशों को साझा करने के साथ–साथ हमारे धार्मिक पक्षों, संस्कार पक्षों, ऋतु पक्षों, प्रणय पक्षों के साथ–साथ सामाजिक विषयों से जुड़े ज्वलंत मुद्दों को समझने में हमारी मदद करते हैं। इन लोकगीतों के विषय में प्रकृति, पर्यावरण एवं मनुष्य के जीवन के समस्त पहलू शामिल हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उत्तराखण्ड की लोकगाथाओं एवं लोकगीतों का प्रभाव उत्तराखण्ड के जन–मानस के दिलों में बड़ी गहराई से जुड़ा है। आज के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में भी उत्तराखण्ड की लोकगाथाओं एवं लोकगीतों का अस्तित्व ज्यों का त्यों बना हुआ है। अनेक अवसरों एवं कार्यक्रमों के दौरान लोकगीत एवं लोकसंगीत यहां की सांस्कृतिक धरोहरों, सांस्कृतिक मूल्यों, विश्वासों, रीति–रिवाजों, परम्पराओं की वास्तविकता से लोगों को रूबरू कराते हैं जिसके परिणामस्वरूप आज की युवा पीढ़ी भी हमारे उत्तराखण्ड की लोकगाथाओं एवं लोकगीतों के महत्व को समझने एवं इन्हें गुनगुनाने की कोशिश करती हैं।

संदर्भ सूची

1. बदोली, राजेन्द्र प्रसाद (2015) *उत्तराखण्ड समग्र ज्ञानकोश,* बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी, देहरादून, पृ. 283।
2. नवानी, लोकेश एवं रावत, कल्याण सिंह (2016) *उत्तराखण्ड इयर बुक,* बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी, देहरादून, पृ. 383।
3. www.hinsoli.com, उत्तराखण्ड लोक साहित्य का महत्व, Accessed 12/07/2025.
4. बदोली, राजेन्द्र प्रसाद (2015) *उत्तराखण्ड समग्र ज्ञानकोश,* बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी, देहरादून, पृ. 283।
5. www.hinsoli.com, लोककथाऐं, Accessed 12/07/2025.
6. बदोली, राजेन्द्र प्रसाद (2015) *उत्तराखण्ड समग्र ज्ञानकोश,* बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी, देहरादून, पृ. 283।
7. बदोली, राजेन्द्र प्रसाद (2015) *उत्तराखण्ड समग्र ज्ञानकोश,* बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी, देहरादून, पृ. 284।
8. https://wegarhwal.com, गढ़वाल की लोकगाथाऐं एवं उनकी पृष्ठभूमि, Accessed 12/07/2025.
9. बदोली, राजेन्द्र प्रसाद (2015) उत्तराखण्ड समग्र ज्ञानकोश, बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी, देहरादून, पृ. 284।
10. बदोली, राजेन्द्र प्रसाद (2015) उत्तराखण्ड समग्र ज्ञानकोश, बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी, देहरादून, पृ. 284।
11. बदोली, राजेन्द्र प्रसाद (2015) उत्तराखण्ड समग्र ज्ञानकोश, बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी, देहरादून, पृ. 284।

****